16 / 04 / 77 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित योग अनुभूति
ब्राह्मण जन्म की दिव्यता और अलौकिकता का अनुभव

➢➢ बाप समान बनने के लिए शरीर और तीनों सूक्ष्म शक्तियों की चार्जिंग की विधि

➳ _ ➳ शरीर की चार्जिंग

→ मैं आत्मा रूपि ड्रैवर हूँ
→ बाप की श्रीमत प्रमाण इस रथ को ड्राइव कर रही हूँ
→ बाप के द्वारा दिए गए लक्ष्य को पकड़ने में कही भी प्रॉब्लम ना हो
→ मैं आत्मा इस रथ की मदद से अपने लक्ष्यों को सहज ही पकड़ सकूँ
■ शिव पिता की डिवाइन लाइट माइट से मेरा यह रथ सम्पूर्ण रूप से आत्मा का सहयोगी बनते हुए सहज ही उसे लक्ष्य तक पहुँचायेंगे

➳ _ ➳ मन की चार्जिंग

→ मन रुपी शक्ति माया रावण का बोस बन गई
→ माया रानी को सम्पूर्ण रीति से अपने कार्य में सहयोगी बना रही हूँ
→ माया द्वारा आनेवाले संकल्पों और विजनों को माया की रीति से डिस्पले ना करें
→ उन्हें अपनी चढ़ती कला के लिए सहयोगी बना लेंगे
→ माया सुबह यह संकल्प दिया की आप अभी उठो नही रेस्ट कर लो
→ उस समय माया की यह डयूटी दिया कि इस समय अमृतवेले में किसी भी विकार के पोइन्ट को उठने नही दो
→ और उन्हें आधा कल्प के लिए रेस्ट दिला दो
→ ऐसे दिनभर उसको उसके द्वारा दिए गए कार्य में ही लगा देंगे
■ शिव पिता की डिवाइन लाइट माईट से मन रुपी शक्ति माया को सम्पूर्ण रूप से अन्डर कर उसे विकारों को पूरे कल्प के लिए दूर करने में सहयोगी बना रही है

➳ _ ➳ बुद्धि की चार्जिंग

→ बुद्धि रुपी शक्ति अपने में चढ़े हुए माया के सर्व पुराने व नए बोझ को बाप को ट्रांसफर कर दिया
→ व्यर्थ के सर्व बोझ बाप को ट्रान्सफर कर दिया
→ सदा स्वमान की सीट पर रहने की क्वालिटी ले रही हूँ
→ बाप की सर्व क़्वालिटीयों से स्वयं को सम्पन्न बना रही हूँ
■ शिव पिता की डिवाइन लाइट माईट से बुद्धि रुपी शक्ति व्यर्थ का टोटल बोझ माया के सर्व बोझ बाप को देकर बाप की टोटल क्वालिटीयों से सम्पन्न बन रही हूँ

➳ _ ➳ संस्कार की चार्जिंग

→ चलते फिरते मैं बाप समान फरिश्ता हूँ
→ मेरा पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से कोई रिश्ता नहीं
→ जैसे चाहें वैसे संस्कार अपने बना लिया
→ जैसे बाप निर्बन्धन है ऐसे निर्बन्धन बनि
■ शिव पिता की डिवाइन लाइट माईट से ऐसे संस्कारों की हाईएस्ट क्वालिटी से सम्पन्न बनती मेरी संस्कार रुपी शक्ति।

■ मैं सदा अपने ब्राह्मण कुल की मर्यादा के लकीर के अन्दर रहने वाले 'मर्यादा पुरूषोत्तम' हूँ
■ मैं सुनने, सुनाने और समान बनने वाले आत्मा हूँ
■ सदा सर्व प्राप्तियों के सहारे में रहने वाले श्रेष्ठ आत्मा हूँ
■ सदा बाबा के साथ रहने से मेरा यह ब्राह्मण जन्म साधारण नहीं दिव्य और अलौकिक बन गई